एकमात्र उद्देश्य श्रीकृष्ण को जानना है। यदि कोई भगवद्गीता से श्रीकृष्ण के तत्त्व को जानकर और भक्तियोग में तत्पर होकर कृष्णभावनाभावित हो जाय तो समझना चाहिए कि वह वैदिक-शास्त्रों से होने वाले ज्ञान की सर्वोच्च पूर्णता को प्राप्त हो चुका है। श्रीचैतन्य महाप्रभु ने इस पद्धति को बड़ा सरल बना दिया है। उन्होंने जन-साधारण से निवेदन किया है कि वह केवल **हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे,** इस महामन्त्र का कीर्तन करते हुए भक्तियोग में संलग्न रहे और प्रसाद पाये। जो मनुष्य प्रत्यक्ष रूप से इन भक्तिभावमय क्रियाओं में संलग्न है, वह निश्चित रूप से सम्पूर्ण वैदिकशास्त्रों का अध्ययन कर चुका है; उसे सार-तत्त्व उपलब्ध हो चुका है। अवश्य ही जो कृष्णभावनाभावित नहीं है अथवा भक्तियोग के परायण नहीं हैं, उन साधारणजनों के लिए कर्तव्य-अकर्तव्य का निर्णय वैदिकविधान के आधार पर किया जाना चाहिए। ऐसा मनुष्य शास्त्रविधि का तर्क किए बिना पालन करें। इसका नाम शास्त्रानुगमन है। करणपाटव, विप्रलिप्सा, भ्रम और प्रमाद—बद्धजीवों के इन चारों दोषों से शास्त्र मुक्त हैं। इन दोषों के कारण कोई भी बद्धजीव स्वयं विधिविधान नहीं कर सकता। अतएव शास्त्रों के विधि-विधान को, जो उपरोक्त सभी दोषों से मुक्त हैं, सभी सन्त, आचार्य और महात्मा बदले बिना स्वीकार करते हैं।

आध्यात्मिक विद्या के अनेक सम्प्रदाय हैं; इनके सविशेषवादी और निर्विशेषवादी —ये दो मुख्य वर्गीकरण हैं। ये दोनों वैदिक-विधान के अनुसार जीवन-यापन करते हैं। शास्त्र-विधि के बिना कृतकृत्यता नहीं हो सकती। अतएव जो शास्त्र के यथार्थ तात्पर्य को जानता है, वह भाग्यशाली है।

मानवयोनि में श्रीभगवान् के तत्त्व से द्वेष करना ही सब पतनों का कारण है। यह वास्तव में मनुष्ययोनि का सबसे बड़ा अपराध है। इसी कारण श्रीभगवान् की अपरा शक्ति (माया) हमें त्रिविध क्लेशों के रूप में सदा दुःख देती रहती है। यह प्रकृति त्रिगुणमयी है। भगवत्-तत्त्व का मार्ग तभी प्रशस्त होगा, जब मनुष्य सत्त्वगुण में स्थित हो जाय। जो सत्त्वगुण में आरूढ़ नहीं होता, वह आसुरी जीवन के कारण रजोगुण और तमोगुण में बना रहता है। रजोगुणी और तमोगुणी मनुष्य शास्त्रों की, साधुओं की और गुरु के तत्त्व की भी निन्दा करते हैं तथा शास्त्रविधि से विमुख रहते हैं। भक्तियोग के माहात्म्य को सुनने पर भी वे आकर्षित नहीं होते। इसके स्थान पर वे सिद्धि की अपनी ही पद्धतियों की कल्पना किया करते हैं। मानवसमाज के ये कुछ ऐसे दोष हैं, जिनसे जीवन आसुरी स्तर पर गिर जाता है। परन्तु यदि सद्गुरु का आश्रय प्राप्त हो जाय, जो जीव को परम गति की ओर ले जाने में समर्थ हों, तो जीवन सफल हो जाता है।

ॐतत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे दैवासुरसंपद्विभागयोगो नाम षोडशोऽध्यायः।।१६।।

इति भक्तिवेदान्त भाष्ये षोडशोऽध्यायः।।